साँप की महक बनाम महक का साँप

साँप की भी अपनी महक होती है – इसकी कभी कल्पना या पूर्वज्ञान नहीं रहा; जिज्ञासा भी प्रायः उन्हीं स्थिति-क्षेत्रों के बारे में पनपती है, जो चेतन-अचेतन मानस में कल्पना या परोक्ष बोध के तौर पर तैर रहे होते है। बहरहाल, एक अलग ढंग की गमक का सामना पिछले दिनों हुआ, जो लगभग पैंतीस साल पहले एक बड़े विषैले साँप के मारे जाने के बाद उससे उठने वाली गंध के समान था, इसीलिए उसकी स्मृति भी अनायास जेहन में आई। लेकिन इस बार न साँप मरा था और न वह जीवित प्रत्यक्ष था, हालाँकि महकने वाले स्थान पर तीन दिन पहले ही एक बड़ा सर्प दोपहर में दिखा जरूर था। स्थानीय स्तर की विशालता एवं विषधरता के शीर्ष पर होने के बावजूद उसमें भयावहता कम, दर्शनीयता अधिक थी। जैसे ही बहुत धीमे से 'बड़ा साँप' कहकर औरों को दिखाना चाहा, वह चक्षुश्रवा बड़ी तेजी से 'पद बिनु चलै, सुनै बिनु काना' का जीता-जागता नमूना पेश करते, सड़कते सूखी जमीन की सीमा पार करते दालान के दूसरे छोर की तरफ, उत्तर-पूर्व की ओर दूर घासफूस में चला गया था। जिस दिन सुबह-सुबह महक का एहसास हुआ, उसी दिन दोपहर में बास-स्थान पर फिर वही पहले वाले स्थान से मात्र एक-आध मीटर की दूरी से आगे निकलते दिखा। दोनों दिन वह पोर्टिको में खड़ी बोलेरो गाड़ी के समीप था, सामने होने के बावजूद उसकी ऐसी-वैसी या कैसी भी गमक का भान नहीं हुआ। दूसरी बार बोलेरो के नीचे सोए कुत्ते को देखकर वह तीव्रता से दूर जाकर अमरूद के पेड़ के पास रखीं लकड़ियों में घुस गया। संस्कृत की सूक्ति 'काकचेष्टा वकोध्यानं श्वान निद्रा

तथैव च' को झुठलाते कुत्ते ने उस पर ध्यान नहीं दिया और न ही नागराज ने उसे डँसने के लिए क्षण भर भी ठमकना उचित समझा। रोज की भाँति जब अगले दिन अमरूद खाने के ख्याल से उसी पेड़ के पास गया, तो वहाँ उसकी पूर्ववत महक विद्यमान थी, पर वह स्वयं नहीं दिखा।

इस बार सर्प को दो बार देखा, वह पिछले 15 साल से कभी-कभार दिखता रहा है। एकदम वही मानने का आधार आकार-प्रकार, हावभाव, घूमने का रूट-क्षेत्र और अंदाज करीब-करीब पूर्ववत होना है। चूँकि प्रौढ़ावस्था को प्राप्त है, इसलिए आकार में परिवर्तन की गुंजाइश जल्दी नहीं। गँवई लोकविश्वास है कि साँप अपने-आप नहीं मरता, मारने पर ही मरता है। सही है कि अपने-आप मरा साँप यहाँ नहीं देखा गया, पर चिड़ियाघर वाले साँपों के बारे में यह सच साबित नहीं होता। इस विषम स्थिति में उसकी आयु की सीमा स्पष्ट नहीं लगती, हालाँकि विज्ञान में पंद्रह से चालीस वर्ष तक निर्धारित है। पौराणिक कथाओं में सर्प को लंबी आयु का प्राणी माना गया है, तक्षक साँप की उम्र हजार साल तक कही गई है।

जहाँ तक इस सर्प के दृष्टिगोचर होने का एहसास है, वह 2007 से चिन्हित है, जब ग्रीष्मावकाश में एक दिन दोपहर टेप के गानों को सुनकर बँसवाड़ी की तरफ से वह सीधा घर के मुख्य द्वार की ओर आ रहा था, पोर्टिको में खड़ी बोलोरो के समीप पहुँचा ही था कि हमारे टोकने पर गाड़ी के पास से अपने दाहिने घूम गया और जलावन की थोड़ी लकड़ियों में घुस गया। आस-पड़ोस की कहावली जानकारों का कहना है कि गर्भवती महिलाओं को साँप नहीं देखना चाहिए, क्योंकि होने वाला बच्चा साँप की तरह जीभ बिलबिलाने लगता है। सर्पराज को वहाँ से

हटाने के निमित्त मिट्टी का तेल लाने घर के भीतर जैसे ही आया, वह बँसवाड़ी में चला गया। इस कवायद में पड़ोसियों ने पूरा साथ निभाया था।

अनेक जीव दूसरों के भोजन हैं, इसलिए खाने मात्र के लिए वे उनसे लगाव और द्वेष का अनूठा समन्वय रखते हैं। कुछ जंतु दूसरे जीवों के भोजन तो नहीं हैं, पर स्वभावतः दूसरों पर भौंकना, लड़ना और मारना उनकी फितरत है। यथा, कुत्ता साधारणतः सभी जंतुओं – छोटे चूहे से लेकर विशालकाय हाथी तक पर भौंकता है। साँप सबको नहीं काटता, पर जहरीलेपन के कारण उसकी अपनी जान पर सदैव खतरा खड़ा रहता है। आदमी के अलावे नेवला और कुत्ता उसके कट्टर दुश्मन हैं। इसके बावजूद, पचास-पचास, सौ-सौ साल तक सर्प जीवित रह लेते हैं – गंध, आहट की समझ-परख शक्ति की बदौलत। दूसरी ओर, प्राणियों में सहअस्तित्व भी खूब देखने को मिलता है, इसलिए सर्प जहाँ जाकर छुपा या गायब हुआ, वहाँ से गोह निकलता है और एक-दो दिन पहले नेवला पूरी लकड़ी खंगाल चुका होता है। कुत्ता न साँप पर भौंकता है और साँप सुविधा होने पर भी कुत्ते को काटता है। नेवला भले साँप का काल है, पर कुत्ते को देखते उसके होश उड़ जाते हैं। यह सब आदमी की भाँति उसके चेहरे से भी लक्षित होता है। अस्तु, खपरैल व कच्चे मकानों की जगह छतदार मकान बन जाने और बरसात का पानी चारों ओर भर जाने से साँपों रहना मुहाल हो गया है। गाँवों में साँप पकड़ने वाले जल्दी नहीं मिलते, अतः इन्हें जंगलों में छोड़े जाने का सवाल ही नहीं उठता।

बहरहाल, सर्प जब दिखा, तब महक महसूस नहीं हुई, परंतु जहाँ महक महसूस हुई, वहाँ वह पहली दफा छः-सात घंटे बाद

दृष्टिगत हुआ। दूसरी बार जहाँ वह अंत तक दिखकर गायब हुआ, वहाँ उसकी महक दूसरे दिन मिली। उसकी गंध उसके बृहदाकार विषैले स्वभाव के अनुरूप ही थी; बहुत कुछ बिच्छू के तेल की गंध की तरह ही।

बेशक वह साँप की ही गंध थी, पर यह कैसे जानें कि वह नैसर्गिक देहगंध है या भौतिक धरातल पर निर्मित गंध। नैसर्गिक देहगंध अत्यंत सूक्ष्म बास है, इसे ठीक-ठीक पहचानना आसान नहीं। भौतिक गंध में भोजन से उत्पन्न गंध, शारीरिक गंदगी या सफाई-साधनों से उत्पन्न गंध सहित अन्य आवरणों की गंध हावी रहती है, जिस कारण प्राकृतिक गंध का विलोपन हो जाता है। उदाहरण के तौर पर मनुष्य मात्र की नैसर्गिक महक को एक ओर दाँतों की गंध, मुँह का बास, पसीना, गंदगी; तो दूसरी ओर साबुन-शैंपू, तेल, पाउडर-क्रीम, बाँडी लोशन, इत्र-स्प्रे और कपड़ों की गंध के बीच पा लेना दुष्कर है, उल्टे ये सब ही मनुष्यता की गंध के पर्याय होने की उद्घोषणा करते हैं। इन सबसे परे आदमी की कोई गंध भी है, इसके बारे में सोचने, उसे महकने को किसी के पास फुर्सत नहीं। क्या इसीलिए जल व कुछ गैसों की तर्ज पर आदमी को भी गंधहीन मान लिया जाना चाहिए? लेकिन आत्मशास्त्र कहता है कि इस दुनिया में गंध किसकी नहीं होती। जितने जड़-चेतन पदार्थ हैं, सब गंधयुक्त हैं, भले ही वह सुगंध से युक्त हो या दुर्गंध से या फिर दोनों से परे अनुभवातीत होने के कारण घ्राणेन्द्रिय (नाक) की सीमा में न समा पाता हो। इतना बड़ा आदमी भी कई गंधों का समुच्चय होकर एक विशिष्ट गंध का धात्री है। यों भी जब रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द से ही किसी को किसी का बोध होता है, तो फिर क्या मनुष्य और क्या भुजंग – दोनों में इनके खासकर गंध के न होने

का सवाल ही कहाँ है।